पुणना International School
Shree Swaminarayan Gurukul, Zundal

PERIODIC ASSIGNMENT- 1	
GRADE – 7	SUBJECT – HINDI
SYLLABUS - अपठित गदयांश	लेखन विभाग ,
व्याकरण विभाग	वसंत पाठ- 1, 2, 3, 4
बाल महाभारत पाठ- 1,2,3,4	

(अपठित विभाग)

➢ अपठित गदयांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए |

1) ओलंपिक खेलों का अपना एक ध्वज है। यह सफेद रंग का है। इस ध्वज में पाँच छोटे-छोटे गोल घेरे होते हैं। ये पाँच घेरे विश्व के पाँच महाद्वीपों एशिया, अफ्रीका, यूरोप, आस्ट्रेलिया और अमेरिका का प्रतिनिधित्व करते हैं। इन गोल घेरों का आपस में जुड़े होना इस भावना का प्रतीक है कि ये पाँचों महाद्वीप एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। ओलंपिक खेल आरंभ होने से पहले एक मशाल जलाकर लाई जाती है। इस मशाल को ओलंपिया से चलते हुए उस नगर में लाया जाता है जहाँ ओलंपिक खेल हो रहे हैं। इस ओलंपिक मशाल को जहाँ तक संभव हो दौड़ते हुए ही ले जाया जाता है। मेजबान देश का सर्वोच्च अधिकारी इन खेलों का उद्घाटन करता है।इसके पश्चात् सभी देशों के खिलाड़ियों का मार्च पास्ट होता है। मार्च पास्ट में सबसे आगे एक खिलाड़ी ओलंपिक ध्वज लिए हुए चलता है। ओलंपिक ध्वज के पीछे खेलों में भाग लेने वाले देश के प्रमुख खिलाड़ी अपने-अपने देश का राष्ट्रीय ध्वज लिए हुए चलते हैं। यहाँ ओलंपिक मशाल जलाई जाती है तथा खेल संबंधी नियमों की शपथ ली जाती है। इसके पश्चात् खेल आरंभ होता है।

प्रश्नः 1. गद्यांश का मूलभाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तरः गद्यांश का मूलभाव है-ओलंपिक खेलों के ध्वज से परिचित कराते हुए खेलों के उद्घाटन और इसकी महत्ता से परिचित करवाना।

प्रश्नः 2.'मेज़बान', 'आरंभ'-शब्दों का अर्थ लिखिए।

उत्तरः मेजबान-आयोजन करने वाला देश/व्यक्ति , आरंभ-शुरुआत

प्रश्नः 3. ओलंपिक खेलों में इसके ध्वज की महत्ता स्पष्ट कीजिए।

उत्तरः ओलंपिक खेलों में इसका ध्वज अपना विशेष महत्त्व रखता है। सफेद रंग के इस ध्वज पर पाँच छोटे-छोटे घेरे बने हैं, जो विश्व के पाँचों महाद्वीपों का प्रतिनिधित्व करते हुए उनका एक साथ जुड़ा होना दर्शाते हैं।

प्रश्नः 4. ओलंपिक खेलों का उद्घाटन किस तरह किया जाता है?

उत्तरः इस खेल के आरंभ में एक मशाल जलाई जाती है। इसे ओलंपिया से उस देश में लाया जाता है जहाँ ओलंपिक खेलों का आयोजन हो रहा है। इसके बाद मेजबान देश का सर्वोच्च अधिकारी इन खेलों का उद्घाटन करता है।

प्रश्नः 5. विश्व के लिए ओलंपिक खेलों का क्या महत्त्व है?

उत्तरः ओलंपिक खेलों में विश्व के अनेक देशों के विभिन्न खेलों के खिलाड़ी जुटते हैं। वे खेल संबंधी नियमों की शपथ लेते हैं। इससे उनके बीच मेल-जोल बढ़ता है। यह मेल-जोल केवल खिलाड़ियों तक सीमित न होकर देशों के बीच हो जाता है।

2) हमारा यह कर्तव्य है कि हम विकलांगों के प्रति अपना दृष्टिकोण बदलें। उनके प्रति मानवीय दृष्टि का परिचय दें। उनमें निहित हीन भावना को दूर कर उनमें आत्म-विश्वास जगाएँ। उनके पुनर्वास के लिए प्रयत्नशील रहें। उन्हें यह अनुभव कराया जाए कि वे भी समाज का एक महत्त्वपूर्ण अंग हैं। उन्हें भी एक सामान्य व्यक्ति के समान अधिकार प्राप्त हैं। वे भी मतदान करके राष्ट्र के निर्माण में सहायक बन सकते हैं। वे भी अपनी उपलब्धियों का पुरस्कार पाने के अधिकारी हैं। विकलांगों के पुनर्वास के लिए यह ज़रूरी है कि उन्हें दूसरों के समान रोज़गार, वेतन आदि दिए जाएँ। ऐसा करना कठिन अवश्य है, क्योंकि पढ़े-लिखे सामान्य युवकों के लिए तो रोज़गार उपलब्ध नहीं, फिर भी इनके लिए कुछ स्थान निश्चित किए जा सकते हैं। इनके लिए सरकार रोज़गार के विशेष साधन उपलब्ध कराए। वे जो-जो कर सकते हैं, उन्हें उन कामों में लगाया जाए। बहरा व्यक्ति कई काम कर सकता है। लंगड़ा व्यक्ति हाथों की सहायता से काम कर सकता है। अंधा व्यक्ति सूत कात सकता है। कुछ ऐसे भी काम हैं, जिन्हें विकलांग एक-दूसरे की सहायता से भी कर सकते हैं।

प्रश्नः1.उपर्युक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक लिखिए।
उत्तरः गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक है-विकलांगों के प्रति हमारा कर्तव्य।
प्रश्नः2.विकलांग राष्ट्र निर्माण में किस तरह सहायता कर सकते हैं?
उत्तरः विकलांग व्यक्ति मतदान करके राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान दे सकते हैं।
प्रश्नः3. आज विकलांगों के प्रति हमारा कर्तव्य किस तरह बदल गया है और क्यों?
उत्तरः आज यह आवश्यक हो गया है कि हम विकलांगों के प्रति अपना दृष्टिकोण बदलें, उनमें निहित हीन भावना दूर कर उनमें आत्मविश्वास जगाएँ और उनके साथ मानवीय व्यवहारकरें, क्योंकि वे भी हमारे समाज के अंग हैं।
प्रश्नः4. विकलांगों का पुनर्वास करने के लिए क्या किया जाना चाहिए? यह कार्य कठिन क्यों है?
उत्तरः विकलांगों के पुनर्वास के लिए उन्हें भी दूसरों के समान रोज़गार, वेतन आदि दिया जाना चाहिए। यह कार्य इसलिए कठिन है क्योंकि हमारे देश में पढ़े-लिखे सामान्य लोगों के लिए ही रोज़गार के अवसरों की कमी है।
प्रश्नः5. विकलांगों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए क्या-क्या ध्यान रखना चाहिए?
उत्तरः विकलांगों को आत्मनिर्भर बनाते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि उन्हें रोज़गार के विशेष अवसर उपलब्ध करवाते हुए उनसे वे ही काम करवाए जाने चाहिए जिनके योग्य वे हैं, जैसे-पैर से अपंग व्यक्ति हाथ से कई काम कर सकता है।

➢ अपठित पदयांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए |

तेरी पाँखों में नूतन बल,
कंठों में उबला गीत तरल,
तू कैसे हाय, हुआ बंदी, वन-वन के कोमल कलाकार।
क्या भूल गया वह हरियाली!
अरुणोदय की कोमल लाली?
मनमाना फुर-फुर उड़ जाना, नीले अंबर के आर-पार!
क्या भूल गया बंदी हो के
सुकुमार समीरण के झोंके
जिनसे होकर तू पुलकाकुल बरसा देता था स्वर हज़ार?
रे, स्वर्ण-सदन में बंदी बन
यह दूध-भात का मृदु भोजन
तुझको कैसे भा जाता है, तज कर कुंजों का फलाहार!
तू मुक्त अभी हो सकता है,

अरुणोदय में खो सकता है,
झटका देकर के तोड़ उसे, पिंजरे को कर यदि तार-तार!
पंछी! पिंजरे के तोड़ द्वार।

(क) कवि को किस बात का दुख है?

उत्तर- कवि पक्षी के पिंजरे में कैद हो जाने पर दुखी है क्योंकि उसने पक्षी को सदैव खुले समान में उड़ते और मधुर गीत गाते सुना है और अब वह पिंजरे में कैद मौन हो गया है।

(ख) कवि पंछी को क्या-क्या याद दिला रहा है?

उत्तर- प्रकृति में फैली हरियाली, सुबह-सुबह चंद्रमा के उदित होने पर चारों ओर फैली लालिमा, नीले अंबर के आर-पार उड़ने का आनंद तथा हवा के मधुर झोंकों की याद कवि पंछी को दिला रहा है।

(ग) कवि पंछी को किस बात की उम्मीद दिलाकर आगे बढ़ने को कह रहा है?

उत्तर- कवि वनों के सुख की याद दिलाकर पक्षी को यह उम्मीद दिला रहा है कि यदि वह चाहे तो मुक्त होकर सुबह की लालिमा में खो सकता है। लेकिन इसे प्राप्त करने के लिए उसे साहस के साथ पिंजरे का द्वार तोड़ना होगा।

लेखन -विभाग

➢ अनुच्छेद

1) त्योहारों का महत्त्व

संकेत बिंदु-.

- विभिन्न क्षेत्रों के अपने-अपने त्योहार
- विभिन्न प्रकार के त्योहार
- त्योहारों का महत्त्व
- त्योहारों के स्वरूप में परिवर्तन

भारत त्योहारों एवं पर्यों का देश है। शायद ही कोई महीना या ऋतु हो, जब कोई-न-कोई त्योहार न मनाया जाता हो। भारत एक विशाल देश है। यहाँ की विविधता के कारण ही विविध प्रकार के त्योहार मनाए जाते हैं। यहाँ परंपरा और मान्यता के अनुसार नागपंचमी, रक्षाबंधन, दीपावली, दशहरा, होली, ईद, पोंगल, गरबा, वसंत पंचमी, बैसाखी आदि त्योहार मनाए जाते हैं। इसके अलावा कुछ त्योहारों को सारा देश मिलकर एक साथ मनाता है। ऐसे त्योहारों को राष्ट्रीय पर्व कहा जाता है। इन पर्यों में स्वतंत्रता दिवस, . गणतंत्र दिवस तथा गांधी जयंती प्रमुख हैं। ये त्योहार हमारे जीवन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।ये त्योहार जहाँ भाई-चारा, प्रेमसद्भाव तथा सांप्रदायिक सौहार्द्र बढ़ाते हैं, वहीं राष्ट्रीय एकता, देशप्रेम और देशभक्ति की भावना को भी प्रगाढ़ करते हैं। इनसे हमारी सांस्कृतिक गरिमा सुरक्षित रहती है। वर्तमान में इन त्योहारों के स्वरूप में पर्याप्त बदलाव आ गया है। रक्षाबंधन के पवित्र अभिमंत्रित धागों का स्थान बाज़ारू राखी ने, मिट्टी के दीपों की जगह बिजली के बल्बों ने तथा होली के प्रेम और प्यार भरे रंगों की जगह कीचड़, कालिख और पेंट ने ले लिया है। आज इन त्योहारों को सादगी एवं पवित्रता से मनाने की आवश्यकता है।

2) अनुच्छेद – ‘ मेरे जीवन का लक्ष्य ‘

रुपरेखा : लक्ष्य क्या है – लक्ष्य प्राप्ति – लक्ष्य पूरा करना

मनुष्य ही एक ऐसा प्राणी है जिसमें ईश्वर ने सोचने समझने की शक्ति प्रदान की है। उचित और अनुचित का चुनाव कर हम अपने भविष्य को सँवारने की कल्पना करते हैं। उसी कल्पना को साकार करने के लिए जीवन में एक लक्ष्य होना जरूरी है। हर इंसान का लक्ष्य अलग-अलग होता है। कोई इंजीनियर, डॉक्टर, अध्यापक तो कोई व्यवसाय करना चाहता है। लोगों की निस्वार्थ सेवा करने की मन की चाहत को मैंने अपना जीवन लक्ष्य बनाया। और उसी रास्ते पर चलते हुए बारहवीं की कक्षा में बहुत मेहनत कर अच्छे नम्बरों से पास हुआ। मेडिकल कॉलेज में प्रवेश परीक्षा में उत्तीर्ण हो कर एक मेडिकल कॉलेज में दाखिला ले लिया। लगनशील होकर पढ़ाई की और सफलतापूर्वक डॉक्टर बन गया। हॉस्पिटल में लगन से काम कर अपने से बड़े डॉक्टरों से तरह-तरह के इलाजों को

सीखा। हॉस्पिटल में काम करने के कुछ सालों बाद अपना दवाखाना खोला। मैंने मरीजों की दिन रात सेवा की। गरीब मरीजों से कम पैसा लेने लगा। हमेशा एक बात का ख्याल रखा कि कोई भी पैसे या किसी और वजह से इलाज़ से वंचित न रह जाए। निष्ठा से अपना काम किया तो ख्याति और आशीर्वाद भी खूब कमाया। यही था मेरे जीवन का लक्ष्य।
यह मेरे लिए एक यादगार यात्रा थी।

3) अनुच्छेद – ' प्रदूषण एक समस्या '

रुपरेखा : जटिल समस्या – वजह – समाधान

वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण एक दानव की भांति है जो मुँह फाड़े वातावरण को निगलने के लिए तैयार खड़ा है। कल-कारखानों और मोटर वाहनों से निकलता जहरीला धुआं, वातावरण में इतना फैल चुका है कि सांस लेना तक दूभर हो गया है। महानगरों में जहाँ घनी आबादी होती है लेकिन पेड़-पौधों की संख्या कम होती है वहां तो यह एक विकराल रूप ले चुका है। हवा के साथ-साथ कारखानों से निकला दूषित रिसाव नदी-नालों में छोड़ने की वजह से जल भी दूषित हो गया है। कारखानों की खटपट, वाहनों के भोंपू तथा लाउडस्पीकरों की तीखी आवाजों ने मिल कर ध्वनि प्रदूषण इतना बढ़ा दिया है कि दिमाग में हर समय एक तनाव की स्थिति बानी रहती है। इन सब प्रदूषणों की वजह से धरती में गर्मी बढ़ रही है जिस वजह से वर्षा, बाढ़ और ऋतुओं तक के चक्र में भी बदलाव आ गया है। हिम पर्बतों के जल्दी पिघलने से समुद्र के जल स्तर में बढ़ोतरी हो रही है, जो कई शहरों के अस्तित्व को अपने आगोश में समा लेगा।इस विशालकाय प्रदूषण से बचने के लिए हमें वैज्ञानिक और संवैधानिक तरीकों से प्रदूषण की रोकथाम करनी होगी। अधिक से अधिक संख्या में पेड़-पौधे लगाकर फिर से वातावरण को स्वस्थ बनाना होगा। भोंपू न बजाने के नियम को और सख्त करना होगा। आएं हम सब मिल कर इस प्रदूषण नाम की बीमारी का अंत कर फिर से स्वस्थ वातावरण में जीना सींखें।

➢ पत्र लेखन

1) छात्रवृत्ति के लिए प्रधानाचार्य को प्रार्थना पत्र लिखिए।

सेवा में
प्रधानाचार्य महोदय
केंद्रीय विद्यालय
कालिंदी विहार, नई दिल्ली।
विषय – छात्रवृत्ति हेतु प्रार्थना पत्र

महोदय

सविनय निवेदन यह है कि मैं आपके विद्यालय में कक्षा सातवीं 'ए' की छात्रा हूँ। मेरे पिता जी की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है। वे विद्यालय के शुल्क तथा अन्य खर्चे का भार उठा पाने में असमर्थ हैं। मैं अपनी पिछली कक्षाओं में प्रथम स्थान प्राप्त करती रही हूँ तथा खेल-कूद व अन्य प्रतियोगिताओं में भी मैंने अनेक पदक प्राप्त किए हैं।अतः आप से अनुरोध है कि मुझे विद्यालय के छात्रवृत्ति कोष से छात्रवृत्ति प्रदान करने काकष्ट करें,ताकि मैं अपनी पढ़ाई जारी रख सकें। मैं सदैव आपकी आभारी रहूँगी।

आपकी आज्ञाकारी शिष्या,
नेहा तिवारी
कक्षा-सातवीं
दिनांक.......

2) अपनी सहेली को उसके जन्म दिन पर न पहुँच पाने का कारण बताते हुए पत्र लिखिए।

परीक्षा भवन
नई दिल्ली
दिनांक 22 अप्रैल 2020
प्रिय अंशु
मधुर स्मृतियाँ

मैं सपरिवार यहाँ सकुशल हूँ और ईश्वर से तुम्हारे परिवार की कुशलता की प्रार्थना करती हैं। पिछले महीने की 22 तारीख को तुम्हारा जन्मदिन था। तुमने बड़े प्यार से मुझे निमंत्रित भी किया था, परंतु मैं तुम्हारे जन्म दिन में नहीं आ सकी। इसका मुझे बहुत अफसोस है। मुझे पता है कि तुम मुझसे बहुत नाराज़ हो, इसलिए तुमने विद्यालय में भी मुझसे बात नहीं की। जब तुम्हें मेरे न आने का पता चलेगा, तब तुम मुझे अवश्य क्षमा कर दोगी। मेरी दादी की तबियत अचानक बहुत खराब हो गई थी। हम सभी दोपहर से लेकर रात तक अस्पताल में ही थे, इसलिए मैं तुम्हारे जन्मदिन की पार्टी में शामिल नहीं हो सकी।

आशा है, तुम मुझे अवश्य क्षमा कर दोगी।

तुम्हारी सहेली
कोमल।

➢ व्याकरण विभाग

1. भाषा कहते हैं|
   (i) भावों के आदान-प्रदान के साधन को (ii) लिखने के ढंग को
   (iii) भाषण देने की कला को (iv) इन सभी को
2. लिपि कहते हैं।
   (i) भाषा के शुद्ध प्रयोग को (ii) मौखिक भाषा को
   (iii) भाषा के लिखने की विधि को (iv) इन सभी को
3. बोलकर भाव एवं विचार व्यक्त करने वाली भाषा को ____ कहते हैं?
   (i) सांकेतिक भाषा (ii) लिखित भाषा
   (iii) मौखिक भाषा (iv) वैदिक भाषा
4. लिखित भाषा का अर्थ है
   (i) लिपि को समझना **(ii) विचारों का लिखित रूप**
   (iii) किसी के समक्ष लिखकर विचार देना (iv) विचारों को बोल-बोलकर लिखना
5. हिंदी भाषा की उत्पत्ति किस भाषा से हुई?
   (i) अंग्रेजी (ii) फ्रेंच
   (iii) उर्दू **(iv) संस्कृत**

➢ संधि विच्छेद

1- राष्ट्राध्यक्ष – राष्ट्र + अध्यक्ष
2- नयनाभिराम – नयन + अभिराम
3- युगान्तर – युग + अन्तर
4- शरणार्थी – शरण + अर्थी
5- सत्यार्थी – सत्य + अर्थी
6- दिवसावसान – दिवस + अवसान
7- प्रसंगानुकूल – प्रसंग +अनुकूल
8- विद्यानुराग – विद्या + अनुराग
9- परमावश्यक – परम + आवश्यक
10- उदयाचल – उदय + अचल

➢ उपसर्ग

अति –अतिरिक्त, अतिशय, अतिशयोक्ति
अनु – अनुभव, अनुसार,अनुचर, अनुग्रह
निस् – निस्वार्थ, निष्कर्ष निष्पक्ष
परि – परिस्थिति, परिवार, परिहास
हम – हमसफ़र, हमशक्ल, हमदर्द
हर – हरअजीज , हरवक्त, हरदम
खुश –खुशफहमी, खुशदिल, खुशमिजाज
ला – लानत, लाचार, लाइलाज
नि- निषेध, निषिद्ध
परा- पराक्रम,पराकाष्ठा पराविद्या,
प्र- प्रयत्न, प्रारम्भ, प्रेत, प्राचार्य
प्रति- प्रतीक्षा, प्रतीति
सु- सुलभ, सुगन्ध

➢ प्रत्यय

आवट – मिलावट,लिखावट,बसावट, बनावट
आहट – फुसफुसाहट,मरमराहट, घबराहट। छटपटाहट
आया – बनाया, सुनाया, बहलाया, खिलाया
आक – छपाक,तपाक,चटाक, मजाक
आऊ – लडाऊ,गिराऊ,बुझाऊ,घुमाऊ
इमा – गरिमा, लघिमा
नाक – खतरनाक, दर्दनाक
दान – दीपदान, अंगदान, पिंडदान
कार – कलाकार चित्रकार पत्रकार, कुंभकार
आई – बुराई, भलाई, अच्छाई, जुदाई, लम्बाई, उँचाई।
आपा – बुढ़ापा, मोटापा।
आस – मिठास, ख़टास।
आहट – करवाहट, चिकनाहट, हिचकिचाहट।
इमा – लालिमा, गरिमा, मधुरिमा।
ई – गर्मी, ख़ुशी, खेती, सफेदी, नमी।
ता – सुंदरता, मूर्खता, मित्रता, लघुता।
त्व – पशुत्व, मनुष्यत्व, व्यक्तित्व, नेतृत्व।
पन – बचपन, भोलापन, पागलपन, लडक़पन।

➢ काल

Q.1) जिस रूप से क्रिया के होने के समय का बोध हो, उसे क्या कहते है ?

a) वर्तमान काल **b) काल**
c) भूतकाल d) भविष्यकाल

Q.2) "काल" का तात्पर्य है ?

a) कल b) अवधि

c) समय d) मृत्यु

1) वर्तमान काल-

उदहारण

- मेरी बहन डॉक्टर है।
- वह रोज अस्पताल जाती है।
- पिताजी सुबह मंदिर जाते है।
- मॉ इस समय नाश्ता बना रही है।
- बच्चे स्कूल गए है।
- सीता खाना खा रही है |
- शोभा सफाई कर रही है |
- माली पौधों को पानी दे रहा है |

2) भूतकाल :-

- आज हमारा स्कूल बंद था
- हवा बहुत तेज चल रही थी
- वह खा चुका था।
- मैंने पुस्तक पढ़ ली थी।
- वे दोनों मेरे पडोसियों के बच्चे थें।
- वरुण ने कहानी लिखी थी |
- राम ने खाना बनाया था |
- हम घूमने गए थे |

3) भविष्य काल-

- राम कल पढ़ेगा।
- इस साल बारिश अच्छी होगी
- वह मेरी बात नहीं मानेगी।
- आज बाजार बंद रहेगा
- कमला गाएगी|

(साहित्य- विभाग)

➢ निम्नलिखित शब्दार्थ लिखिए |

1) उन्मुक्त = आजाद
2) पिंजराबद्ध = पिंजरे में कैद
3) कनक = स्वर्ण
4) पुलकित = खुशी से झूमना
5) निबोरी = नीम का फल
6) स्वर्ण श्रृंखला = सोने की तीलियाँ
7) फुगनी = पेड़ की सबसे ऊंची डाली
8) क्षितिज = जहाँ धरती आसमान मिलते हो
9) नीड़ = घोसला
10) आश्रय = रहने का ठिकाना
11) विघ्न = बाधा
12) अनमना = उदास
13) धुंधली = अस्पष्ट
14) ज्वर = बुखार
15) निस्तार = उद्धार
16) चारा = उपाय
17) सभ्रांत = शिष्ट
18) भाव- भंगी = स्वरूप
19) विस्मय = आश्चर्य
20) लक्ष्य = मंजिल
21) सरसब्ज = हरी भरी
22) निकेतन = घर
23) सुचेतन = सजीव
24) मुदित = प्रसन्न

➢ अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न-1 पंछी अपना मधुर गीत कब नहीं गए पाएँगें?
उत्तर- पंछी अपना मधुर गीत पिंजरे में बंद होकर नहीं गए पाएँगें।

प्रश्न-2 पंछी कहाँ का जल पीना पसंद करते हैं?
उत्तर - पंछी नदी और झरनों का बहता जल पीना पसंद करते हैं।
प्रश्न-3 पंछियों के अरमान क्या थे?
उत्तर - पंछियों के आकाश की सीमा तक उड़ने के अरमान थे।

प्रश्न-4 पंछी कैसा जीवन चाहते हैं?
उत्तर - पंछी एक स्वतंत्र जीवन चाहते हैं।
प्रश्न-5 पिंजरे में पंख फ़ैलाने पर पंछियों की क्या दशा होगी?
उत्तर - पिंजरे में पंख फ़ैलाने पर पंछियों के पंख पिंजरे के सलाखों से टकराकर टूट जायेंगें।
प्रश्न-6 गाँव के लड़के झागभरे जलाशयों में किस महीने में खेलतें हैं?
उत्तर- गाँव के लड़के झागभरे जलाशयों में क्वार के महीने में खेलतें हैं।
प्रश्न-7 दादी माँ ज्वर का अनुमान कैसे लगाती थीं?
उत्तर - दादी माँ छू-छूकर ज्वर का अनुमान लगाती थीं।
प्रश्न-8 दादी माँ कौन से जल से नहाकर आई थीं?
उत्तर - दादी माँ जलाशय के झागभरे जल से नहाकर आई थीं।
प्रश्न-9 दादी माँ बीमार लेखक के लिए क्या ले कर आई थीं?
उत्तर - दादी माँ बीमार लेखक के लिए अदृश्य शक्तिधारी के चबूतरे की मिट्टी लाई थीं।
प्रश्न-10 लेखक ने किसको ससुर और किसको दामाद कहा है?
उत्तर- लेखक ने हिमालय को ससुर और समुद्र को उसका दामाद कहा है।
प्रश्न-11 नदियों का उल्लास कहाँ जाकर गायब हो जाता है?
उत्तर- नदियों का उल्लास मैदान में जाकर गायब हो जाता है।
प्रश्न-12 नदियां कहाँ उछलती, कूदती और हँसती दिखाई पड़ती हैं?
उत्तर - नदियां हिमालय की गोद में उछलती, कूदती और हँसती दिखाई पड़ती हैं।
प्रश्न-13 हिमालय की बेटियाँ पाठ के लेखक कौन हैं?
उत्तर - हिमालय की बेटियाँ पाठ के लेखक नागार्जुन हैं।
प्रश्न-14 इस पाठ में हिमालय की बेटियाँ किन्हें कहा गया है?
उत्तर - इस पाठ में हिमालय की बेटियाँ नदियों को कहा गया है।
प्रश्न-15 नदी का गंभीर और शांत रूप किस भाँति प्रतीत होता है?
उत्तर - नदी का गंभीर और शांत रूप संभ्रांत महिला की भाँति प्रतीत होता है।
प्रश्न-16 लेखक ने नदियों का कुछ और रूप कब देखा?
उत्तर - जब लेखक हिमालय के कंधे पर चढ़ा तो उसने नदियों का कुछ और रूप ही देखा।
प्रश्न-17 हिमालय पर नदियों का रूप और स्वभाव कैसा होता है?
उत्तर - हिमालय पर नदियाँ दुबली पतली होती हैं और इनके स्वभाव में चंचलता होती है।
प्रश्न-18'कठपुतली' कविता के रचयिता कौन हैं?
उत्तर- 'कठपुतली' कविता के रचयिता भवानीप्रसाद मिश्र हैं।

➢ लघु प्रश्नों के उत्तर लिखिए |

प्रश्न-1 पिंजरे में पंछी क्या-क्या नहीं कर सकते?
उत्तर - पिंजरे में पंछी पंख नहीं फैला सकते, ऊँची उड़ान नहीं भर सकते, बहता जल नहीं पी सकते और पेड़ों पर लगे हुए फल नहीं खा सकते।
प्रश्न-2 कविता में पंछी क्या याचना कर रहें हैं?
उत्तर - कविता में पंछी याचना कर रहे हैं कि चाहे उनके घोंसलें तोड़ दें या चाहे उनके टहनी के आश्रय छिन्न भिन्न कर दें पर जब उन्हें पंख दिए हैं तो उनके उड़ान में विघ्न न डालें।
प्रश्न-3 हर तरह की सुख सुवधाएं पाकर भी पक्षी पिंजरे में बंद क्यों नहीं रहना चाहते?
उत्तर - हर तरह की सुख सुवधाएं पाकर भी पक्षी पिंजरे में बंद इसलिए नहीं रहना चाहते क्योंकि उन्हें स्वतंत्रता पसंद हैं, वह बंधन में नहीं रहना चाहते। वह खुल कर आकाश में उड़ना चाहते हैं।
प्रश्न-4 पहली कठपुतली की बात दूसरी कठपुतलियों को क्यों अच्छी लगी?
उत्तर - पहली कठपुतली की बात दूसरी कठपुतलियों को इसलिए अच्छी लगी क्योंकि स्वंत्रता सभी को अच्छी लगती है। सभी कठपुतलियाँ पराधीनता से मुक्त हो कर स्वतंत्र होना चाहती थीं। किसी भी कठपुतली को धागे में बं ध कर रहना और दूसरों के इशारे पर नाचना पसंद नहीं था।
प्रश्न-5 लेखक के मन में नदियों को बहन का स्थान देने की भावना कब उत्पन्न हुई?
उत्तर - एक दिन लेखक का मन उचट गया था, तबीयत ढीली थी। वह सतलज के किनारे जाकर बैठ गया और अपने पैर पानी में लटका दिए। थोड़ी ही देर में उस प्रगतिशील जल ने कवी पर असर डाला। उनका तन और मन ताज़ा हो गया और उन्होंने नदियों को बहन मान कर एक कविता रच दी और उसे गुनगुनाने लगे।
प्रश्न-6 पर्वतराज हिमालय को सौभाग्यशाली क्यों कहा गया है?
उत्तर - दोनों महानादियाँ सिंधु और ब्रह्मपुत्र समुद्र की ओर प्रवाहित होती रही है। समुद्र को पर्वतराज हिमालय की इन दो बेटियों का हाथ पकड़ने का श्रेय मिला इसलिए इसे सौभाग्यशाली कहा गया है।
प्रश्न-7 कठपुतली को गुस्सा क्यों आया?
उत्तर- कठपुतली को गुस्सा इसलिए आया क्योंकि वह धागे में बँधी हुई पराधीन महसूस करती है और उसे दूसरों के इशारे पर नाचने से दुःख होता है। वह स्वतंत्र होना चाहती है।

➢ दीर्घ प्रश्नों के उत्तर लिखिए |

प्रश्न-1 देबू की माँ ने लेखक के साथ हाथापाई क्यों शुरू कर दी?
उत्तर - विवाह की रात को औरतें अभिनय करती हैं । यह प्रायः एक ही कथा का हुआ करता है, उसमें विवाह से लेकर पुत्रोत्पत्ति तक के सभी दृश्य दिखाए जाते है। लेखक पास ही में एक चारपाई पर चादर ओढ़कर लेटा हुआ था। भाभी की बात पर उसकी हँसी रुक न सकी और उसका भंडाफोड़ हो गया। देबू की माँ ने चादर खींच ली और उसे भगाने के लिए हाथापाई शुरू कर दी।
प्रश्न-2 लेखक बचपन और अब की बीमारी में क्या अंतर महसूस करता है?
उत्तर - बचपन में जब लेखक बीमार पड़ता तो दादी माँ बड़े स्नेह से उसका देख भाल करतीं। दिन-रात चारपाई के पास बैठी रहतीं, कभी पंखा झलतीं, कभी जलते हुए हाथ-पैर कपड़े से सहलातीं, सर पर दालचीनी का लेप करतीं, बीमार वाला खाना बनवाती और बीसों बार छू-छूकर ज्वर का अनुमान करतीं। आज जब लेखक बीमार पड़ता है तो नौकर पानी दे जाता है, मेस-महाराज अपने मन से पकाकर खिचड़ी या साबू। डॉक्टर साहब आकर नाड़ी देख जाते हैं और कुनैन मिक्सचर की शीशी की तिताई के डर से बुखार भाग भी जाता है, पर दादी की स्नेहपूर्ण देखभाल नही मिलती इसलिए लेखक को अब ऐसे बुखार को बुलाने का जी नहीं होता।
प्रश्न-3 सिंधु और ब्रह्मपुत्र की क्या विशेषताएँ बताई गई हैं?
उत्तर - सिंधु और ब्रह्मपुत्र ये दो ऐसे नाम हैं जिनके सुनते ही रावी, सतलुज, व्यास, चनाब, झेलम, काबुल, कुभा, कपिशा, गंगा, यमुना, सरयू, गंडक, कोसी आदि हिमालय की छोटी-बड़ी सभी नदियों के नाम याद आ जाते

हैं। वास्तव में सिंधु और ब्रह्मपुत्र की उत्पत्ति हिमालय के पिघले हुए जमी बर्फ़ के जल से हुई है। समुद्र भी स्वंय को सौभाग्यशाली मानता है कि उसे पर्वतराज हिमालय की इन दो बेटियों का हाथ पकड़ने का श्रेय मिला है।

प्रश्न-4 काका कालेलकर ने नदियों को लोकमाता क्यों कहा है?

उत्तर - नदियाँ हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा हैं। नदियों के बिना जीवन की कल्पना भी संभव नहीं। नदियों के किनारे पर प्राचीन काल में कई सभ्यताओं का विकास हुआ। नदियाँ पर्यावरण और प्रकृति को स्वच्छ बनाए रखने में सहायक होती हैं। इनके जल से फ़सल सींचे जाते हैं। आधुनिक युग में नदी के जल को रोक कर बाँधों का निर्माण किया गया है जो जल की आवश्यकता पूर्ती के साथ-साथ विद्युत् ऊर्जा की आवश्यकता को भी पूर्ण करती है। नदियों की इस महत्ता के कारण ही काका कालेलकर ने नदियों को लोकमाता कहा है।

बाल महाभारत

प्रश्न-1 महाभारत की कथा किसकी देन है?

उत्तर- महाभारत की कथा महर्षि पराशर के कीर्तिमान पुत्र वेद व्यास की देन है ।

प्रश्न-2 व्यास जी ने महाभारत की कथा सबसे पहले किसे कंठस्थ कराई थी?

उत्तर- व्यास जी ने महाभारत की कथा सबसे पहले अपने पुत्र शुकदेव को कंठस्थ कराई थी और बाद में अपने दूसरे शिष्यों को ।

प्रश्न-3 मानव जाति में महाभारत की कथा का प्रसार किसके द्वारा हुआ?

उत्तर - मानव जाति में महाभारत की कथा का प्रसार महर्षि वैशंपायन के द्वारा हुआ ।

प्रश्न-4 महर्षि वैशंपायन कौन थे?

उत्तर - महर्षि वैशंपायन व्यास जी के प्रमुख शिष्य थे ।

प्रश्न-5 किसके यज्ञ में सूत जी भी मौजूद थे?

उत्तर - महाराजा परीक्षित के पुत्र जनमेजय के यज्ञ में सूत जी भी मौजूद थे ।

प्रश्न-6 सूत जी के द्वारा बुलाई गयी सभा के अध्यक्ष कौन थे?

उत्तर - सूत जी के द्वारा बुलाई गयी सभा के अध्यक्ष महर्षि शौनक थे ।

प्रश्न-7 महाराजा शांतनु के बाद किसको हस्तिनापुर की गद्दी मिली?

उत्तर - महाराजा शांतनु के बाद उनके पुत्र चित्रांगद को हस्तिनापुर की गद्दी मिली ।

प्रश्न-8 बाद में हस्तिनापुर की गद्दी विचित्रवीर्य को क्यों दी गई?

उत्तर - चित्रांगद की अकाल मृत्यु के बाद उनके भाई विचित्रवीर्य को हस्तिनापुर की गद्दी दी गई ।

प्रश्न-9 विचित्रवीर्य के दो पुत्रों के नाम लिखो ।

उत्तर - विचित्रवीर्य के दो पुत्रों के नाम हैं - धृतराष्ट्र और पांडु ।

प्रश्न-10 धृतराष्ट्र ज्येष्ठ पुत्र थे फिर पांडु को गद्दी पर क्यों बिठाया गया?

उत्तर - धृतराष्ट्र जन्म से अंधे थे इसलिए उस समय की निति के अनुसार पांडु को गद्दी पर बिठाया गया ।

प्रश्न-11 किसने राजा शांतनु को अपने सौंदर्य और नवयौवन से मोह लिया?

उत्तर- गंगा ने राजा शांतनु को अपने सौंदर्य और नवयौवन से मोह लिया ।

प्रश्न-12 पैदा होते ही गंगा अपने पुत्रों से साथ क्या किया करती थी?

उत्तर- पैदा होते ही गंगा अपने पुत्रों को नदी की बहती हुई धारा में फेंक दिया करती थी ।

प्रश्न-13 गंगा को पुत्रों को नदी में फेंकता देख कर भी राजा शांतनु कुछ क्यों नहीं कर पाते थे?

उत्तर -राजा शांतनु ने गंगा को वचन दिया था जिसके कारण वह सब कुछ देखकर भी मन मसोस कर रह जाते थे ।